NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

जायद मौसम में उड़द की खेती

डॉ0 हरिकेश एवं लोकेश यादव

परिचय:

दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में बनने वाली गांठों में उपस्थित जीवाणु वायुमण्डलीय नत्रजन को भूमि में स्थिर करके भूमि को उपजाऊ बनाती है। इस प्रकार यह फसल भूमि की उर्वराशक्ति को बनाये रखने में भी सहायक है।

भूमि का चुनाव

हल्की रेतीली दोमट या मध्यम प्रकार की भूमि जिसका पीएच 7–8 के मध्य हो व पानी की निकास की समुचित व्यवस्था हो वह उड़द के लिये उपयुक्त है।

बीज की मात्रा उपचार एवं बुआई

15–20 किग्रा बीज प्रति हे. के मान से उपयोग करें। बीज को बाविस्टीन की 2 मात्रा द्वारा उपचारित कर बोये। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखें साथ ही ध्यान रहे कि बीज डेढ़ से दो इंच गहराई पर बोयें।

खाद एवं उर्वरक

मृदा परीक्षण के उपरांत खाद एवं उर्वरक की सुझाई गई मात्रा का उपयोग करें। यूरिया, सिंगलसुपर फास्फेट तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश की 43:375:33 किग्रा प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें। इस हेतु 40 किग्रा डीएपी के साथ 10 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ उपयोग भी किया जा सकता है।

सिंचाई

ग्रीष्मकालीन फसल होने के कारण की उड़द फसल को 5–6 सिंचाईयों की आवश्यकता पड़ती हैं। फूल–फल बनने की अवस्था पर यदि खेत में नमी न हो तो एक सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण–

फसल एवं खरपतवावर की प्रतिस्पर्धा की अंतिम अवधि बुवाई के 15–30 दिनों तक रहती है इस बीच निंदाई करने या डोरा चलाने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं साथ ही वायु का संचार होता है जिससे पौधों की ग्रंथियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमण्डलीय नत्रजन एकत्रित करने में

डॉ हरिकेश 'सहा. प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग, आषा भगवान बख्ष सिंह महाविद्यालय, पूरा बाजार, अयोध्या

लोकेश यादव शोध छात्र, सब्जी विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या

सहायता मिलती है। रसायनिक नियंत्रण हेतु खेत तैयार करते समय, बोने से पहले पेंडीमिथालीन 3 ली. या एलाक्लोर (लासो) 2 ली. को 500 ली. पानी में मिलाकर बोने के बाद व अंकुरण से पूर्ण भूमि में फ्लेटफेन नोजल युक्त पम्प से मिलायें।

उन्नतशील जातियां

जवाहर उड़द–2, पीयू–30, पीयू–19, एलबीजी–20 का स्वस्थ, सुडौल, रोगरोधी बीज उपयोग करें।

रोग कीट नियंत्रण

मूंग व उड़द की फसल में पानी पीला मोजेक, भभूतिया रोग व फली छेदक कीट का प्रकोप मुख्यतः होता है। पीला मोजेक एक विषाणु जनित रोग है, जो सफेद मक्खी नामक कीट द्वारा फैलता है। रोग कारक पौधे की पत्तियों में हरे पर्णिम के बीच–बीच में पीले दाग बनते हैं। जो आपस में मिलकर पूरी पत्ती को सुखा देते हैं। रोकथाम हेतु मिथाइल डिमेटान अथवा डाइमिथियेट की 300 मिली मात्रा का प्रति एकड़ छिड़काव करें। फली छेदक कीट, फलियों के दानों को नुकसान पहुंचाता है, इनके नियंत्रण हेतु क्विनाफॉस 400 मिली का प्रति एकड़ छिड़काव करें। भभूतिया रोग में पत्तियों पर सफेद चूर्ण की सतह दिखाई देती है, यह चूर्ण रोगकारक फफूंद के बीजाणु व कवकजाल होता है। पर्णदाग रोग में गहरे भूरे धब्बे पत्तियों पर बनते हैं जो बाद में लाल रंग के हो जाते हैं। दोनों रोगों के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम की 250 ग्राम मात्रा 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

कटाई एवं गहाई–

जब 70–80 प्रतिशत फलियां पक जाने तक कटाई आरंभ करें। फसल को खलिहान में 3–4 दिन तक सुखाकर गहाई करें। इस प्रकार उन्नत तरीके से खेती करने पर 8–10 क्विं. उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

उड़द की उन्नत खेती एवं फसल सुरक्षा उपाय

उड़द एक दलहनी फसल हैं। उड़द को खरीफ में उगाने के साथ– साथ जायद में भी इसकी सफल खेती की जा सकती हैं। फॉस्फोरस अम्ल अन्य दालों की तुलना में 8 गुना अधिक होता हैं। उड़द में प्रोटीन 24ः तथा कार्बोहाइड्रेड 60ः पाया जाता हैं। उड़द की खेती करने से 45 किलोग्राम नाइट्रोजन भूमि को प्राप्त होता हैं।

भूमि का चुनाव व तैयारी

उड़द की खेती हर प्रकार की मृदा में की जा सकती हैं। परंतु उत्तम जल निकास वाली हल्की रेतीली या माध्यम प्रकार की भूमि

उड़द की खेती के लिए उपयुक्त हैं भूमि की तैयारी के लिए एक जुताई गहरी मिटटी पलटने वाले हल से व 2– 3 जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर से करके करना चाहिए।

बीजदर व बीजोपचार

जायद में उड़द की बुवाई हेतु 25– 30 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती हैं। बुवाई से पूर्व 2– 2.5 ग्राम थीरम या केप्टान या 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोषित करना चाहिए। इसके बाद बुवाई के समय राइजोवियम कल्चर तथा पी. एस. वी. कल्चर से उपचारित करके बुवाई करना चाहिए।

बुवाई का समय एवं विधि

जायद में उड़द की बुवाई का उचित समय 15 फरवरी से 15 मार्च तक होता है। उड़द की पौधे से पौधे की दूरी 10 से. मी. तथा पंक्ति की दूरी 30–45 से. मी. तथा 4–5 से. मी. गहरी बुवाई करना चाहिए।

उड़द की प्रजातियाँ

पी. यू.–30, जवाहर उड़द–86, एल. वी.–20, पन्त यू–19, टाइप–9,नरेंद्र उड़द–1, उत्तरा, आजाद उड़द–2, शेखर–2

खाद एवं उर्वरक

उड़द एक दलहनी फसल हैं जिसके कारण नाइट्रोजन की अधिक आवश्यकता नही होती हैं। लेकिन पोधो की प्रारम्भिक अवस्था में जड़ो एवं जड़ ग्रंथियों की वृद्धि एवं विकास के लिए 15– 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40– 45 किलोग्राम फास्फोरस तथा 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर देना चहिये।

निराई– गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण

उड़द की बुवाई के 15– 20 दिन की अवस्था में गुड़ाई हाथो द्वारा खुरपी की सहायता से करनी चाहिए। रासायनिक विधि से नियंत्रण हेतु फ्लुक्लोरीन 1 किलोग्राम सक्रीय तत्व प्रति हैक्टेयर की दर से 800– 1000 लीटर पानी में गोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

बीज की बुवाई के बाद परंतु बीज के अंकुरण के पूर्व पेन्थिमेथलीन 1.25 किलोग्राम संक्रिय तत्व की दर से 800– 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से खरपतवारो का नियंत्रण किया जा सकता हैं।

प्रमुख रोग

पिला मोजेकः–

इस रोग के लक्षण पतियो पर गोलाकार धब्बो के रूप में दिखाई देता हैं। यह दाग एक साथ मिलकर तेजी से फैलते हैं। जो बाद में बिलकुल पिले हो जाते हैं। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता हैं इस रोग के नियंत्रण हेतु डाइमेथोएट 30 ई. सी.

की एक लीटर मात्रा 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

पर्ण दागः–

इस रोग के लक्षण सबसे पहले पत्तियो पर गोलाई लिए भूरे रंग के कोणीय धब्बे के रूप में दिखाए देते हैं, जिसके बीच का भाग राख या हल्का भूरा तथा किनारा बैंगनी रंग का होता हैं। इस रोग के नियंत्रण हेतु कार्बेडाजिम 500 ग्राम पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

किटः–

थ्रिप्सः–

इस किट के शिशु एवं वयस्क दोनों पत्तितो से रस चूसकर नुकसान पहुचाते हैं। इस किट के नियंत्रण हेतु डायमेथोएट 30 ई. सी. 1 लीटर दवा 600– 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

हरे फुदकेः–

यह कीट पत्ती की निचली सतह पर बड़ी संख्या में पाए जाते है। प्रौढ़ का रंग हरा,इसकी पीठ के निचले भाग में काले धब्बे पाए जाते है। इस किट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोरपिड का 0.3 मिली दवा प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

फली बेधकः–

इस कीट की सुंडी उड़द की पत्तियों में छेद करके उसमे विकसित हो रहे बीज को खा जाती है। इस किट के नियंत्रण के लिए क्युनोल्फोस 25 ई. सी. की 1.25 लीटर दवा 600– 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

कटाई एवं मढ़ाईः–

पकने के समय उड़द की फलियाँ हरे रंग में परिवर्तित हो जाती है। ऐसे समय पर फसल की कटाई कर लेना चाहिए। उड़द की कुछ प्रजातियाँ एक समय पर नही पकती अतः इन प्रजातियों की फलियों को 2– 3 बार में तोड़ लेना चाहिए।

उड़द की फसल बौने के 85– 90 दिन में पक कर तैयार हो जाती हैं। उड़द की वो फसलें जो एक साथ पकती हैं उनकी कटाई हासिये की सहायता से करके खलिहान में सूखा देना चाहिए।

उपजः–

10– 15 क्विंटल उपज प्राप्त की जा सकती हैं।